सूरजमुखी की खेती

870. **श्री अजीत जोगी :**
श्री राजूभाई ए. परमार :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सूरजमुखी की खेती राज्य-वार कुल कितने क्षेत्र में की जाती है;

(ख) क्या सरकार और अधिक क्षेत्र में सूरजमुखी की खेती शुरू करने का विचार विचार रखती है;

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और

(घ) आठवीं पंचवर्षीय योजनावधि के दौरान ऐसी कौन-कौन सी परियोजनाएं शुरू करने का विचार है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मु. वापल्ली रामचन्द्रन) :(क) सूरजमुखी की खेती मुख्यतया आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में की जाती है । इन राज्यों में सूरजमुखी की खेती के तहत क्षेत्र का ब्यौरा नीचे दिया गया है :—

(लाख हेक्टेयर)

आन्ध्र प्रदेश	1.60
कर्नाटक	8.86
महाराष्ट्र	4.97

अन्य राज्यों में सूरजमुखी की खेती के तहत क्षेत्र नगण्य है । 1990–91 के दौरान सूरजमुखी की खेती का कुल अखिल भारतीय कवरेज 16.41 लाख हेक्टेयर था ।

(ख) और (ग) जी, हां । यह प्रस्ताव किया गया है कि वर्ष 1992–93 के दौरान खरीफ में सूरजमुखी के तहत क्षेत्र में लगभग 2 लाख हेक्टेयर क्षेत्र की वृद्धि की जाये ।

(घ) केन्द्रीय प्रायोजित तिलहन उत्पादन कार्यक्रम के तहत सूरजमुखी के क्षेत्र में विस्तार और इसके उत्पादन संबंधी कार्य को शुरू किया जा रहा है ।

कृषि अनुसंधान संस्थान

871. **श्री अजीत जोगी :**
श्री राजूभाई ए. परमार :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि अधिकांश कृषि अनुसंधान संस्थान देश के बड़े शहरों और शहरी क्षेत्रों में स्थित है;

(ख) यदि हां, तो उनके क्या कारण हैं;

(ग) क्या सरकार किसानों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए इन संस्थानों को ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरित करने का विचार रखती है; और

(घ) यदि हां, तो कब तक ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री के.सी. लेंका) : (क) और (ख) महोदय, आमतौर पर अनुसंधान संस्थानों की स्थापना स्थान की उपयुक्तता, अपेक्षित सुविधाओं की उपलब्धता और विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्ताओं जैसे— अनुसंधान कर्ताओं, छात्र, उद्योग के प्रतिनिधियों और किसानों की वहां आसानी से पहुंच को ध्यान में रखकर की जाती है ।

(ग) नहीं ।

(घ) प्रश्न ही नहीं उठता ।

भारतीय कृषि के संबंध में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान का आकलन

872. **श्री अजीत जोगी :** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने अपनी पत्रिका "टैक्नोलॉजी एग्रीकल्चरल ग्रोथ एंड रीजनल इम्बैलेंस" में मूल्य की दृष्टि से भारतीय कृषि की क्षमता का कोई आकलन किया है;